Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी शहीद छितुसिंह किराड़ का योगदान का विश्लेषण

डॉ. एच. डुडवे*

* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस क्रांतिकारी शहीद छितुसिंह किराड़ शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीराजपुर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश– उन्नीसवीं सदी के आसपास अंग्रेजों को हमारे देश में राज करते हुए दो सौ साल बीत चुके थे। उनके शोषण और अत्याचार ने व्यापक रूप धारण कर लिया था छल कपट से अपना राज चला रहे थे। अधिकत्तर राजाओं ने अंग्रेजों की ताकत के सामन घुटने टेक दिये थे। परन्तु कुछ वीर ऐसे थे जिन्होने हार नहीं मानी और आखरी दम तक विरोध करते रहे। ऐसे ही वीरों में से एक था छितुसिंह किराड़ मध्यप्रदेश के अलीराजपुर के पास के सौरवा गांव के वीर स्वतंत्रता सेनानी थे, यह ऐसा समय था जब जनजातीय समाज पर अटूट अत्याचार और शोषण होता था। 1889 में पुरे क्षेत्र में ऐ जानलेवा अकाल पड़ा। भूखमरी के कारण बहुत लोग मर रहे थे, किन्तु राजा के तरफ से लोगों कोई मदद नहीं की गई। एक तरफ जहां जनजातीय समाज के लिए खाने के लाले पडे हुए थे और अंग्रेजों शासन जनता से लगान वसुलते थे। ब्रिटिश शासन और स्थानीय जमींदारों के अत्याचारों के विरूद्ध संघर्ष किया। इस संघर्ष के कारण वे अपने भीलों की एक सेना तैयार करके बाजारों में गोदामों से अनाज लुटना शुरू कर जैसे– नानपुर, छकतला, भाभरा आदि गांवों में लुटना शुरू किया और लुटा हुआ अनाज सब लोगों के बीच बांट दिया करता था। ब्रिटिश शासन अनेक पकड़ेन के लिए कई प्रयास किए और अंतत: विश्वसघात के कारण वे गिरफ्तार कर लिया गया। ब्रिटिश सरकार अनेक अमानवीय यातनाएँ दी गई, लेकिन वे झुके नहीं। अंतत: उन्हें शहीद कर दिया गया। उनका विद्रोह से जनजातीय समाज में स्वतंत्रता की चेतना जगाई और आगे के जनजातीय आंदोलनों को प्रेरित किया।

शब्द कुंजी– छितुसिंह किराड, जनजातीय, स्वतंत्रता संग्राम, ब्रिटिश शासन, आन्दोलन।

प्रस्तावना – भारत के स्वतंत्रता संग्राम में मुख्य रूप से 1857 की क्रांति और गांधीवादी आंदोलनों पर अधिक ध्यान दिया जाता है, लेकिन जनजातीय विद्रोहों की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं रहे। मध्य प्रदेश अलीराजपुर जिले के ग्राम सोरवा में देश के महान क्रांतिकारी योद्धा छितुसिंह किराड़ का जन्म हुआ था वे ब्रिटिश शासन के कुशासन के विरूद्ध क्रांतिकारियों से साथ युद्ध अभियान छेड दिया था बचपन से ही वे साहसी व दुसरों के दु:ख को समझने वाले संपन्न व्यक्ति थे। समाज के प्रति सोचते थे उस समय पुरा भारत अंग्रेजों का गुलाम था। अंग्रेजों की अधीनता में भारतीय राजाओं और जागीरदारों द्वारा कर के रूप मे कर वसूली करते थे। एक समय ऐसा आया जब अलीराजपुर क्षेत्र में भारी अकाल पड़ा। उस अकाल के चलते उस समय पूरे ग्रामीण इलाकों में भुखमरी का वातावरण बन गया था किसानों के घर जो थोड़ा बहुत कुछ अनाज था, उसे जागीरदारों के माध्यम से अंग्रेज सरकार छीन लेती थी इस कारण गांवों में अत्याचार बढ़ने लगा था, राजाओं के अत्याचारों गरीब जनता और अधिक अत्याचार करते थें। गांव के लोग भूखे मर रहे थे। खाने को कुछ भी नहीं मिल रहा था। ऐसी गंभीर विपरीत परिस्थितियों में शहीत छितुसिह किराड़ ने अपने आस–पास के गांवों में संघर्षशील और साहसी लोगों की टीम बनाई तथा सबके साथ मिलकर गांव के गरीब और असहाय जनता को उस अकाल की भुखमरी से बचाने के लिए कुछ अन्न, धान कहीं से लाने की सोची। परन्तु कोई हल नहीं मिला। इस कारण उनके पास एक ही रास्ता था कि राजाओं के गोदामों में रखा अनाज लूटकर गरीब जनता को बाटकर गरीब जनजातीय समाज की सेवा की है।

शोध की पृष्ठभूमि – छितुसिंह किराड़ का संघर्ष उस समय प्रारंभ हुआ जब ब्रिटिश शासन ने भारतीय समाज की पारंपारिक कृषि व्यवस्था को बाधित किया और करों में अत्यधिक वृद्धि कर दी इस शोध पत्र में यह समझने का प्रयास किया गया है कि उन्होंने किन परिस्थितियों में विद्रोह किया, उनकी सैन्य रणनीति क्या थी, उनके आंदोलन का क्या प्रभाव पड़ा।

शोध उद्देश्य:

1. शहीद छितुसिंह किराड के जीवन और संघर्ष का अध्ययन करना।
2. जनजातीय समाज के लिए विद्रोह का ऐतिहासिक विश्लेषण करना।
3. विद्रोह से जनजातीय समाज में सामाजिक और राजनीतिक प्रभावों का मूल्यांकन करना।

शोध पद्धति– यह शोध ऐतिहासिक दस्तावेजों, मौखिक परंपराओं और उपलब्ध साहित्य के अध्ययन पर आधारित है। इसके लिए प्राथमिक आंकडे जैसे– शासकीय अभिलेख, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और द्वितीय आंकडे इतिहासकारों के लेख, शोध पत्र का उपयोग किया जाएंगा।

क्रांतिकारी शहीद छितुसिंह किराड़ का ब्रिटिश शासन के विरूद्ध विद्रोह के कारण:

1. ब्रिटिश शासन के बढ़ते अत्यचार, अत्यधिक कर वसूली और किसानों की जमीन को जब्त करना।
2. राजाओं और स्थानीय साहूकारों द्वारा जनजातीय समुदायों का शोषण करना।
3. जनजातीय समाज में स्वतंत्रता की भावना और स्वशासन की इच्छा।

संगठित आंदोलन और युद्ध रणनीति बनाना – क्रांतिकार शहीद छितुसिंह किराड़ के द्वारा दुकानदारों और साहूकारों के गोदामों में अनाज को ढेर लगा हुआ था। इस अनाज को व्यापारी गुजरात में बेचकर मुनाफा कमाते थे। लोग बहुत तकलीफ में थे। धीरे–धीरे उनमें गुस्सा पनपने लगा छितुसिंह ने तय किया की वो भीलों की एक सेना तैयार करके बाजारों में गोदामों से अनाज लुटना शुरू किया। लुटा हुआ अनाज सब गरीब जनजातीय परिवारों के बीच बांट दिया जाता था। इन लुट के लिए ही यह आंदोलन शुरू किया गया।

अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष – छितुसिंह किराड़ ब्रिटिश शासन से दबाने के लिये वह अंग्रेजों से मदद् लेने जा पहुंची। शहीद छितुसिंह किराड को जब यह बात मालुम पड़ी तो उसने भी अपनी सेना बढानी शुरू कर दी वैसे ही उसका सैन्यबल काफी अधिक कर चुका था दुर–दुर से उसमें जुड़ने के लिये लोग आ रहे थे। शहीद छितुसिंह किराड़ ने अपने लोगों को जंगल में छुपा दिया। अंग्रेजों से टक्कर लेने के लिये दादु मकरानी से भी की मद्द मागी और उसका साथ दिया। अंग्रेज सेना और घोडो पर आ पहुँचे। उनके पास तरह–तरह के हथियार थे, इनमें बंदुक और भाले भी शामिल थे। जोरदार मुकाबला हुआ। लड़ाई में दाद मुहम्मद मारा गया। छितुसिंह किराड़ भाग कर गुजरात में जाम्बुखेडा चला गया। जहां उसे पकड़ लिया गया। 1883 में छितसिंह किराड़ को जेल में बंद कर दिया गया।

विद्रोह का जनजातीय पर प्रभाव– जनजातीय समुदायों में इस संघर्ष से स्थानीय किसानों में स्वतंत्रता की चेतना जगाई और अंग्रेजों और जमीदारों के विरूद्ध में छोटे– छोटे विद्रोह शुरू हो गई। ब्रिटिश हुकूमत और स्थानीय जमीदारों के अत्याचारों के विरूद्ध संघर्ष किया। उनका यह बलिदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय आंदोलनों की भूमिका को सशक्त बनाया। ब्रिटिश प्रशासन को यह अहसास हुआ कि भारत मे अब शासन करना आसान नहीं होगा।

निष्कर्ष– शहीद छितसिंह किराड़ का संघर्ष के कारण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में यह घटना अद्वितीय स्थान रखता है उन्होने न केवल अंग्रेजों के विरूद्ध लडाई लडी बल्कि किसानों और जनजातीय समुदायों के अधिकारों की रक्षा भी की। उनका बलिदान जनजातीय समुदायों के महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. अलीराजपुर स्टेट गजेटियर 1908 ई.
2. झाबुआ कल और आज।
3. अलीराजपुर स्टेट एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट1914–15
4. मालवा के राठौड़।

****